भाग–पांच

5.1 अभिनव योजना

वन्यप्राणियों का पुर्नस्थापन

बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान में 50 गौरों को दो चरणों में सफलतापूर्वक 50 हेक्टेयर के बाड़े में स्थानांतरित करने तथा उसके बाद वन क्षेत्र में विचरण हेतु विमुक्त किया जा चुका है। इस योजना के द्वारा संकटग्रस्त प्रजाति को एक संरक्षित क्षेत्र से दूसरे संरक्षित क्षेत्र में स्थापित करने में सफलता प्राप्त हुई है। इनके अनुश्रवण का कार्य भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के दो शोधकर्ताओं द्वारा किया जा रहा है। पन्ना में बाघ पुर्नस्थापन एवं कान्हा टाइगर रिजर्व में कृष्णमृग पुर्नस्थापन का कार्य भी किया जा चुका है। विभाग द्वारा संजय टाइगर रिजर्व तथा माधव राष्ट्रीय उद्यान में सामान्य बाघ को पुर्नस्थापित करने का कार्यक्रम विचाराधीन है। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान से 05 चीतलों का पुर्नस्थापन रालामण्डल अभयारण्य में किया गया है।

कान्हा में पाये जाने वाली विशेष बारहसिंगा उप प्रजाति विश्व में और कहीं नहीं पाई जाती तथा यह आवश्यक है कि इस प्रजाति को अन्य संरक्षित क्षेत्रों में भी स्थापित किया जाये ताकि किसी प्राकृतिक आपदा या बीमारी से यह प्रजाति नष्ट न हो जाये। केन्द्र शासन द्वारा इस कार्यक्रम के अंतर्गत 20 बारहसिंगो को बोरी अभयारण्य में स्थानान्तरित करने हेतु Population Habitat Viability Analysis कराने हेतु निर्देशित किया गया था। राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर से यह अध्ययन कराया गया एवं अध्ययन रिपोर्ट भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून को प्रेषित की गई है। मध्यप्रदेश द्वारा बारहसिंगा को कान्हा टाइगर रिजर्व से सतपुड़ा टाइगर रिजर्व स्थानान्तरित करने की अनुमति भारत सरकार से जारी करने का अनुरोध किया गया है, जिस पर निर्णय अपेक्षित है। सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान के अतिरिक्त वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में भी बारहसिंगा लाये जाने के लिए भारत सरकार से अनुरोध किया गया है।

नौरादेही अभयारण्य में अफ्रीकी चीता एवं कूनो पालपुर अभयारण्य में एशियाई सिंहों की पुर्नस्थापना योजना भी प्रस्तावित है।

खरमोर एवं सोनचिड़िया हेतु सूचना देने वाले को पुरूस्कार

विलुप्तप्राय एवं संकटापन्न खरमोर एवं सोनचिड़िया के संरक्षण हेतु जनभागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एक अभिनव योजना प्रचलित है। इसके अंतर्गत इन पक्षियों की सूचना देने वाले व्यक्तियों एवं उनके अण्डे, चूजे एवं रहवास की सुरक्षा सुनिश्चित करने वाले कृषक को नगद प्रोत्साहन राशि दिये जाने का प्रावधान किया गया।

वन्यप्राणी अंगीकरण योजना

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल में 2008 से वन्यप्राणियों के प्रति जन सामान्य के मन में जागरूकता पैदा करने हेतु वन्यप्राणी अंगीकरण योजना को प्रारंभ किया गया है। दिनांक 01.04.2010 से दिनांक 19.11.2013 तक इस योजना के अंतर्गत रू0 18.94 लाख की राशि प्राप्त हो चुकी है।

सतना जिले में चिड़ियाघर एवं रेस्क्यू सेंटर की स्थापना

केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण भारत सरकार एवं माननीय सर्वोच्च न्यायालय से अनुमति प्राप्त कर सतना जिले के मुकुन्दपुर में सफेद बाघ सफारी की स्थापना की जा रही है। यहॉ चिड़ियाघर एवं रेस्क्यू सेंटर की स्थापना भी की जायेगी।

भाग–छः

विभाग द्वारा कोई भी प्रकाशन नही निकाले जा रहें है।

भाग–सात

सारांश

बढ़ती हुई आबादी और संसाधनों की मांग से वनों पर बढ़ते हुए दबाव के कारण वनों के संरक्षण तथा संर्वधन की दिशा में अनेकों चुनौतियां हैं। वनों के साथ–साथ वनों में पाये जाने वाले जीव–जन्तु और जैविक विविधिता को बनाये रखने की चुनौती भी वन विभाग के समक्ष है। शासन द्वारा इन चुनौतियों का सामना करने के लिए वन विभाग को आवश्यक वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराये जाते हैं। सीमित वित्तीय संसाधनों का उपयोग करते हुए वन विभाग प्रदेश के बहुमूल्य वनों तथा वन्यप्राणियों और जैव विविधिता को बनाये रखने एवं वनों पर आजीविका हेतु आश्रित ग्रामीणों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के प्रयास में सफल रहा है। सतत रूप से वनों का संरक्षण और संवर्धन करने तथा विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं के माध्यम से वनक्षेत्रों के समीप रहने वाले ग्रामीणों, मुख्यतः आदिवासियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में वन विभाग निरंतर प्रयासरत है। संयुक्त वन प्रबंधन एवं सूचना प्रौद्योगिकी के ज्यादा से ज्यादा उपयोग द्वारा वन एवं वानिकी को और अधिक उन्नत और जनोन्मुखी बनाया जा सके, यही विभाग की आकांक्षा है।

नोट्स